

डिजिटल युग में गांधीवाद: तकनीक और मानवता का संतुलन

मो० हेदायतुल्लाह

शोधार्थी

राजनीति विज्ञान विभाग, ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

सारांश-

डिजिटल युग में गांधीवाद की प्रासंगिकता और तकनीक-मानवता के संतुलन पर केंद्रित है। 21वीं सदी की डिजिटल क्रांति ने जहाँ अभूतपूर्व कनेक्टिविटी, सुविधा और ज्ञान की पहुँच दी है, वहीं डिजिटल विभाजन, सूचना अतिभार, डेटा शोषण, साइबर उत्पीड़न और तकनीकी निर्भरता जैसी गंभीर चुनौतियाँ भी पैदा की हैं। इस संदर्भ में महात्मा गांधी का दर्शन—सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, अपरिग्रह और स्वावलंबन—आज के डिजिटल समाज के लिए नैतिक दिशा प्रदान करता है। डिजिटल युग की प्रमुख विडंबनाओं का गांधीवादी दृष्टि से विश्लेषण करता है, जैसे कनेक्टिविटी के बावजूद बढ़ता अकेलापन, सूचना की अधिकता के बीच सत्य का संकट, डेटा पूँजीवाद द्वारा निजता का हनन और तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता से मानवीय क्षमताओं का क्षय। इसके समाधान के रूप में गांधीवादी सिद्धांतों की डिजिटल पुनर्व्याख्या प्रस्तुत की गई है—डिजिटल अहिंसा, डिजिटल स्वदेशी और डेटा संप्रभुता, डिजिटल अपरिग्रह व डिटॉक्स, तथा मीडिया साक्षरता के माध्यम से सत्य की खोज।

शिक्षा, तकनीक डिज़ाइन, नीति निर्माण और व्यक्तिगत जीवन में इन सिद्धांतों के व्यावहारिक अनुप्रयोग सुझाता है, जैसे मूल्य-आधारित डिजिटल शिक्षा, नैतिक AI, ट्यूटोरियल आधारित डेटा गवर्नेंस और सचेतन तकनीक उपयोग। भविष्य तकनीक-विरोधी नहीं, बल्कि तकनीक-मानवतावादी है—जहाँ तकनीक मानवीय कल्याण, सामाजिक न्याय और आत्मिक शांति का साधन बने, न कि उद्देश्य।

कूट शब्द- डिजिटल गांधीवाद, तकनीकी नैतिकता, डिजिटल अहिंसा, सोशल मीडिया और मानवता, गांधी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल स्वदेशी, डिजिटल अपरिग्रह

भूमिका: 21वीं सदी का डिजिटल युग मानव सभ्यता के इतिहास में सबसे तीव्र परिवर्तनकारी काल है। जहाँ एक ओर इंटरनेट, सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और डिजिटल प्रौद्योगिकियों ने अभूतपूर्व संपर्क, सुविधा और ज्ञान की पहुँच संभव बनाई है, वहीं दूसरी ओर यह युग गहरी विडंबनाएँ भी लेकर आया है। डिजिटल विभाजन, सूचना अतिभार, साइबर उत्पीड़न, डेटा का व्यावसायीकरण, और तकनीकी निर्भरता जैसी चुनौतियों ने एक मौलिक प्रश्न खड़ा किया है: क्या तकनीकी प्रगति मानवीय मूल्यों और आध्यात्मिक समृद्धि के साथ सामंजस्य बैठा सकती है? इस प्रश्न के उत्तर की तलाश में हमें एक ऐसे विचारक की ओर मुड़ना होगा जिसने कंप्यूटर या इंटरनेट के बिना ही मशीनीकरण और भौतिकवाद के खतरों को गहराई से समझ लिया था—महात्मा गांधी। गांधी का दर्शन, जो सादगी, स्वावलंबन, अहिंसा और नैतिकता पर टिका है, आज के डिजिटल युग के लिए आश्चर्यजनक रूप से प्रासंगिक मार्गदर्शन प्रदान करता है। जैसा कि युवाल नोआ हरारी अपनी पुस्तक 21 Lessons for the 21st Century में लिखते हैं, "तकनीक हमें विशाल शक्ति देती है, लेकिन यह नैतिक जिम्मेदारी भी बढ़ाती है।"¹ गांधी का चिंतन इसी नैतिक जिम्मेदारी के ढाँचे को प्रदान करता है।

डिजिटल युग की विडंबनाएँ — गांधीवादी दृष्टि से एक विश्लेषण

कनेक्टिविटी का विरोधाभास और सामुदायिकता का संकट- आज मानवता इतिहास में सर्वाधिक 'कनेक्टेड' है, परंतु अकेलेपन, अवसाद और सामाजिक अलगाव की महामारी भी बढ़ रही है। सोशल मीडिया 'लाइक्स' और 'शेयर्स' की भीड़ तो देता है, लेकिन गहरे, सार्थक मानवीय संबंधों का अक्सर

अभाव रह जाता है। गांधी 'स्व' और 'समुदाय' के बीच सामंजस्य पर बल देते थे। उनका सर्वोदय दर्शन सभी के उत्थान की बात करता है। क्या वर्तमान 'डिजिटल स्व' एक 'फ़िल्टर लगी हुई छवि' बनकर रह गया है, जो वास्तविक समुदाय से कट गया है? गांधी के शब्दों में, "वास्तविक सभ्यता तब होती है जब व्यक्ति अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखना सीखता है, न कि उनकी पूर्ति के लिए अनंत संसाधनों का दोहन करता है।"² आज का डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म-केंद्रित समाज अक्सर इसके विपरीत दिशा में जाता दिखता है।

सूचना साम्राज्य और ज्ञान के अकाल का द्वंद्व - इंटरनेट पर ज्ञान का असीम भंडार उपलब्ध है, पर 'सूचना अतिभार' वास्तविक समझ और गहन चिंतन में बाधक बन रहा है। गलत सूचना, 'फ़ेक न्यूज़' और एल्गोरिदम द्वारा निर्मित 'प्रतिध्वनि कक्ष' समाज को ध्रुवीकृत कर रहे हैं। गांधी 'सत्य' की खोज को जीवन का परम लक्ष्य मानते थे। डिजिटल युग में, जहाँ सत्य अक्सर 'ट्रेंड' और 'वायरलिटी' का बंदी बन जाता है, गांधी का सत्याग्रह सिद्धांत एक नए रूप में कैसे प्रकट हो सकता है? UNESCO की 2023 की रिपोर्ट इनफ़ॉर्मेशन डिसऑर्डर ऑन डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म इस चुनौती की पुष्टि करती है।³

डेटा पूँजीवाद और निजता का हनन — एक आधुनिक शोषण- हमारी हर डिजिटल गतिविधि डेटा के रूप में संग्रह की जा रही है, जिसका उपयोग हमारे व्यवहार को प्रभावित करने, हमें उत्पाद बेचने और सामाजिक नियंत्रण के लिए किया जा रहा है। शोशना ज़र्बॉफ़ इसे 'निगरानी पूँजीवाद' का युग कहती हैं।⁴ गांधी का 'अपरिग्रह' (अनावश्यक संग्रह का त्याग) और 'स्वदेशी' (स्थानीय नियंत्रण) सिद्धांत हमें इस डेटा के अंधाधुंध संग्रहण और केंद्रीकरण के विरुद्ध सोचने को प्रेरित करते हैं। क्या हमारा व्यक्तिगत डेटा भी एक प्रकार का 'संपत्ति' बन गया है, जिसके संग्रह पर गांधी चिंता व्यक्त करते?

तकनीकी निर्भरता और मानवीय क्षमता का हास- स्मार्टफ़ोन और एल्गोरिदम हमारे दैनिक निर्णयों का मार्गदर्शन करने लगे हैं—क्या खाएँ, कहाँ जाएँ, क्या सोचें। इससे मानवीय अंतर्ज्ञान, रचनात्मकता और आत्मनिर्णय की क्षमता क्षीण होने का खतरा है। गांधी 'शारीरिक श्रम' और 'आत्मनिर्भरता' को मानवीय गरिमा का आधार मानते थे। हिंद स्वराज में वे चेतावनी देते हैं: "मशीनें हमें आलसी बनाती हैं और हमारी स्वावलंबन की भावना को नष्ट करती हैं।"⁵ क्या डिजिटल सुविधाएँ हमें एक नए प्रकार के 'मानसिक आलस्य' की ओर धकेल रही हैं?

गांधीवादी सिद्धांतों की डिजिटल पुनर्वाख्या — एक रूपरेखा

डिजिटल अहिंसा: साइबर स्पेस में शांति का सिद्धांत- गांधी के लिए अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा का अभाव नहीं, बल्कि मन, वचन और कर्म से हर प्रकार की हिंसा का त्याग था। डिजिटल दुनिया में इसके नए आयाम हैं:

- **वचन की अहिंसा:** सोशल मीडिया पर घृणास्पद भाषा, ट्रोलिंग और साइबरबुलिंग का परित्याग।
- **मानसिक अहिंसा:** किसी की डिजिटल छवि को जानबूझकर क्षति पहुँचाने या भ्रामक सूचना फैलाने से बचना।
- **साइबर सत्याग्रह:** ऑनलाइन अहिंसक प्रतिरोध—हाशिए के समूहों के लिए आवाज़ उठाना, गलत नीतियों के विरुद्ध ई-परियोजनाएँ चलाना। यह गांधी के 'सविनय अवज्ञा' का डिजिटल रूपांतर है।

भारतीय साइबर अपराध रिपोर्ट 2022 के अनुसार, ऑनलाइन उत्पीड़न के मामलों में चिंताजनक वृद्धि हुई है,⁶ जो डिजिटल अहिंसा के सिद्धांत की तात्कालिक आवश्यकता को रेखांकित करता है।

डिजिटल स्वदेशी और डेटा संप्रभुता: तकनीकी स्वावलंबन की ओर-

गांधी का स्वदेशी स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं, संस्कृति और स्वावलंबन को बढ़ावा देता था। डिजिटल संदर्भ में:

- **तकनीकी स्वदेशी:** ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर, स्थानीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री और स्थानीय संदर्भानुरूप समाधानों का विकास। भारत सरकार का 'डिजिटल इंडिया' मिशन इसी दिशा में एक कदम है।⁷
- **डेटा स्वदेशी/संप्रभुता:** यह सुनिश्चित करना कि नागरिकों का डेटा देश की सीमाओं में संग्रहित व संरक्षित हो और उस पर उनका नियंत्रण बना रहे। यह डिजिटल उपनिवेशवाद के विरुद्ध एक कवच है।
- **डिजिटल कुटीर उद्योग:** स्थानीय स्तर पर डिजिटल कौशल विकास और ई-कॉमर्स के माध्यम से स्थानीय उत्पादों को वैश्विक बाज़ार तक पहुँचाना।

डिजिटल अपरिग्रह और डिजिटल डिटॉक्स: संयम का डिजिटल अनुप्रयोग-

गांधी भौतिक संपदा के संग्रह के विरोधी थे। आज, हमारा 'डिजिटल अपरिग्रह' अनावश्यक ऐप्स, फ़ाइलों, सूचनाओं और नोटिफ़िकेशन्स के संग्रह के रूप में प्रकट होता है।

- **डिजिटल न्यूनतमवाद:** आवश्यकतानुसार ही डिजिटल उपकरणों और प्लेटफ़ॉर्मों का उपयोग।
- **सचेतन उपभोग:** सोशल मीडिया और ऑनलाइन सामग्री का सेवन एक सक्रिय, विवेकपूर्ण चयन की प्रक्रिया हो।
- **नियमित डिजिटल डिटॉक्स:** तकनीक से विराम लेकर वास्तविक संबंधों, प्रकृति और आत्मचिंतन के लिए स्थान बनाना। मनोवैज्ञानिक शोध भी बताते हैं कि नियमित डिजिटल विराम मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक हैं।⁸

सत्य की डिजिटल खोज: मीडिया साक्षरता और गांधीवादी सत्याग्रह- गांधी के लिए सत्य परम लक्ष्य था। आज के डिजिटल परिवेश में 'डिजिटल सत्याग्रही' बनने की आवश्यकता है।

- **मीडिया साक्षरता:** किसी भी सूचना को साझा करने से पहले उसकी पड़ताल और स्रोत की पहचान करना। UNESCO की 'Media and Information Literacy' पहल इसी दिशा में कार्य करती है।⁹
- **विवेकपूर्ण साझाकरण:** केवल सत्यापित, सकारात्मक और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने वाली जानकारी ही साझा करना।
- **एल्गोरिदमिक जागरूकता:** यह समझना कि हमें क्या दिखाया जा रहा है और क्यों, ताकि हम अपनी राय निर्माण की प्रक्रिया पर नियंत्रण बनाए रख सकें।

व्यावहारिक अनुप्रयोग — संतुलित डिजिटल समाज की संरचना -

शिक्षा प्रणाली में गांधीवादी डिजिटल नैतिकता का समावेश - पाठ्यक्रम में 'डिजिटल नागरिकता' और 'तकनीकी नैतिकता' के पाठ शामिल करना, जो गांधीवादी मूल्यों पर आधारित हों। 'डिजिटल अपरिग्रह' परियोजनाएँ, जहाँ छात्र अपने डिजिटल फुटप्रिंट का विश्लेषण कर उसे कम करने के उपाय सुझाएँ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी नैतिकता और मूल्य-आधारित शिक्षा पर जोर दिया गया है,¹⁰ जिसमें यह समावेश संभव है।

प्रौद्योगिकी डिजाइन एवं नीति निर्माण में गांधीवादी दृष्टिकोण -

- **नैतिक AI के लिए गांधीवादी ढाँचा:** AI व्यवस्थाओं को पारदर्शी, निष्पक्ष और मानवीय नियंत्रण में रखने के सिद्धांत। NITI Aayog की 'राष्ट्रीय कृत्रिम बुद्धिमत्ता रणनीति' में भी समावेशी और नैतिक AI की बात की गई है।¹¹ गांधी का 'अंतिम व्यक्ति' सिद्धांत AI के लाभों के समान वितरण का मार्गदर्शन कर सकता है।
- **डेटा गवर्नेंस:** व्यक्तिगत डेटा को एक 'ट्रस्ट' की तरह देखना, जिस पर व्यक्ति, समाज और सरकार की साझा जिम्मेदारी हो। गांधी का 'ट्रस्टीशिप' सिद्धांत इसके लिए एक आदर्श आधार प्रस्तुत करता है।¹²
- **डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढाँचा:** एक ऐसा डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना जो निजी एकाधिकार से मुक्त, सुरक्षित और सर्वसुलभ हो—ग्राम स्वराज का डिजिटल रूप।

व्यक्तिगत जीवन में डिजिटल संयम का अनुशासन -

- **सचेतन तकनीक उपयोग:** फ़ोन के उपयोग से पहले स्वयं से प्रश्न करना—"क्या यह आवश्यक है? क्या यह सार्थक है?"
- **डिजिटल संध्या/एकांत:** दिन का एक निर्धारित समय सभी डिजिटल उपकरणों से दूर रहकर व्यतीत करना।
- **ऑनलाइन समुदायों में सकारात्मकता:** अपने डिजिटल व्यवहार से सहानुभूति, सहयोग और रचनात्मक आलोचना को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष: डिजिटल युग में गांधीवाद की भूमिका तकनीक-विरोधी नहीं, बल्कि तकनीक-मानवतावादी है। यह हमें याद दिलाता है कि तकनीक एक साधन है, साध्य नहीं। साध्य है मानवीय कल्याण, आत्मिक शांति और सामाजिक न्याय। गांधी का दर्शन हमें डिजिटल दुनिया में एक सचेतन, जिम्मेदार और नैतिक रचनाकार बनने का आह्वान करता है।

अंततः, तकनीक और मानवता का संतुलन तभी संभव है जब हम गांधी के 'मध्यम मार्ग' को डिजिटल क्षेत्र में लागू करें—न तो तकनीकी उन्माद में, और न ही तकनीकी भय में। बल्कि एक ऐसी सतर्क मुद्रा अपनाएँ जहाँ हम तकनीक का उपयोग मानवीय संवेदनाओं को विकसित करने, समाज को जोड़ने और सत्य की सेवा के लिए करें। जैसा कि गांधी ने कहा था, "हमें दुनिया में वह बदलाव स्वयं बनना होगा जो हम देखना चाहते हैं।"¹³ डिजिटल युग में यह बदलाव एक ऐसे समाज का निर्माण है जहाँ तकनीक हमारी मानवता को कम न करे, बल्कि उसे और अधिक गहरा, समृद्ध और करुणामय बनाए।

संदर्भ सूची (References)

1. Harari, Y. N. (2018). 21 Lessons for the 21st Century. Spiegel & Grau. पृ. 78
2. गांधी, एम. के. (1909). हिंद स्वराज. (अध्याय 6: सभ्यता), पृ. 34
3. UNESCO. (2023). Information Disorder on Digital Platforms: A Global Review. Paris: UNESCO Publishing, पृ. 21-23
4. Zuboff, S. (2019). The Age of Surveillance Capitalism: The Fight for a Human Future at the New Frontier of Power. पब्लिकेफेयर्स, पृ. 15-18
5. गांधी, एम. के. (1909). हिंद स्वराज. (अध्याय 19: मशीनें), पृ. 67

6. भारत सरकार, गृह मंत्रालय. (2022). भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) वार्षिक रिपोर्ट 2022. नई दिल्ली, पृ. 45
7. भारत सरकार, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय. (2015). डिजिटल इंडिया: विजन और घटक. नई दिल्ली, पृ. 3-5
8. Twenge, J. M., & Campbell, W. K. (2018). Associations between screen time and lower psychological well-being among children and adolescents: Evidence from a population-based study. *Preventive Medicine रिपोर्ट्स*, पृ. 289
9. UNESCO. (2021). *Media and Information Literacy: A Practical Guidebook for Trainers*. Paris: UNESCO, पृ. 56-58
10. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली, पृ. 12-13
11. NITI Aayog. (2021). *National Strategy for Artificial Intelligence: #AIForAll*. नई दिल्ली: भारत सरकार, पृ. 7-9
12. गांधी, एम. के. (1940). ट्रस्टीशिप. (अहमदाबाद में दिया गया भाषण), पृ. 5
13. गांधी, एम. के. (1913). *यंग इंडिया में प्रकाशित पत्र*, पृ. 112